AGPE THE ROYAL GONDWANA RESEARCH JOURNAL
OF HISTORY, SCIENCE, ECONOMIC, POLITICAL AND SOCIAL SCIENCE
ISSN (E): 2583-1348 | A Peer reviewed | Open Access & Indexed
Volume 05 | Issue 03 | March 2024 | www.agpegondwanajournal.co.in | Page No. 24-27

जशपुर रियासत का ऐतिहासिक अध्ययन

डॉ रामानुज प्रताप सिंह धुर्वे
सहायक प्राध्यापक इतिहास
शास. बा. सा. दे. महा. कुनकुरी जिला जशपुर (छ. ग.)

सारांश

भारत में ब्रिटिश अधीनता के समय अनेक देशी रियासते थीं। इन रियासतों की विदेश नीति ब्रिटिश साम्राज्य के अधीन थी परंतु गृह नीति पर राजा का एकाधिकार था। यह एकाधिकार नाम मात्र का था क्योंकि इन देशी रियासतों को सदैव इस बात का डर रहता था कि कब ब्रिटिश साम्राज्य इन देशी रियासतों का विलय कर दे या रियासत के राजा को अपदस्थ कर किसी और को राजा न बना दे। इसके बावजूद भारत में आजादी के समय तक 562 रियासतें थी। मध्यप्रांत में ही 14 रियासत मौजूद थी। इन रियासतों में मध्यप्रांत के उत्तर पूर्व में स्थित जशपुर रियासत अपनी भौगोलिक परिस्थितियों व सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण रियासत थी। जशपुर रियासत अपनी जनजातीय संस्कृति, रियासत कालीन प्रशासन व ईसाई मिशनरियों के द्वारा किये गए कार्यों के कारण क्षेत्रीय इतिहास में अपना विशिष्ट स्थान रखता है।

प्रस्तावना

जशपुर रियासत मध्यप्रांत के प्रमुख रियासतों में से था। प्रारंभ में यह रियासत बंगाल प्रांत के हिस्सा हुआ करता था। 1905 में जब संबलपुर जिला व इससे सम्बद्ध 5 रियासते बामरा,रेहराखोल, सोनपुर,पटना व कालाहांडी को बंगाल को स्थानांतरित किया गया तब बदले में चांगभाखर, कोरिया, सरगुजा, उदयपुर व जशपुर रियासत को मध्यप्रांत का हिस्सा बनाया गया। जशपुर रियासत में आदिवासी जनसंख्या की अधिकता रहीं है। छत्तीसगढ़ में ईसाई मिशनरियों का व्यापक प्रभाव भी जशपुर रियासत पर पड़ा। वर्तमान समय में जशपुर छत्तीसगढ़ का प्रमुख जिला है। अपनी विशिष्ट भौगोलिक स्थिति व जनजातिय संस्कृति के कारण जशपुर रियासत अपना विशिष्ट स्थान रखता है।

जशपुर रियासत की सीमाएं :- जशपुर रियासत मध्यप्रांत के उत्तर पूर्व में स्थित था। जशपुर रियासत का क्षेत्रफल 1948 वर्ग मील था। जशपुर रियासत के पूर्व में बंगाल प्रांत का रांची जिला, पश्चिम व उत्तर में मध्यप्रांत का सरगुजा रियासत व

CORRESPONDING AUTHOR:	RESEARCH ARTICLE
डॉ रामानुज प्रताप सिंह धुर्वे सहायक प्राध्यापक इतिहास शास. बा. सा. दे. महा. कुनकुरी जिला जशपुर (छ. ग.) Email: r4ramanuj.singh@gmail.com	

दक्षिण में मध्यप्रांत का उदयपुर व रायगढ़ रियासत एवं बंगाल प्रांत की गंगपुर रियासत स्थित थे। जशपुर रियासत सरगुजा समूह की रियासतों में सरगुजा के बाद दूसरी सबसे बड़ी रियासत थी।[1]

जशपुर रियासत की भगौलिक विशेषता:- जशपुर रियासत मध्यप्रांत में 22°-17' और 23°-15' उत्तरी अक्षांश व 83°-30' और 84°-24' पूर्वी देशांतर के मध्य में स्थित था। जशपुर रियासत वन व पहाड़ों की अधिकता थी।[2] जशपुर रियासत के आधा भाग पहाड़ी व आधा भाग मैदानी था। पहाड़ी भाग को उपरघाट व मैदानी भाग को नीचघाट कहा जाता है। जशपुर रियासत में छोटी पहाड़ियों की अनवरत श्रृंखला व चट्टानों के टीले प्रचुर मात्रा में है। ईब यहाँ की प्रमुख नदी है।

जशपुर रियासत की स्थापना :- जशपुर राज्य की स्थापना की आरंभिक जानकारी प्रदान करने में इतिहास के पन्ने मौन है परन्तु वाचिक परंपरा से हमें मालूम होता है कि प्रारंभ में जशपुर क्षेत्र में डोम शासकों का शासन था। अंतिम डोम शासक रायभान को पराजित कर सुजनराय ने जशपुर राज्य में राजपूत वंश की नींव डाली थी। सुजनराय के बारे में कहा जाता है कि वह राजस्थान के बांसवाड़ा स्थान से सम्बंधित थे। सुजनराय सोनपुर के राजपूत राजा के ज्येष्ठ पुत्र थे। सुजनराय जब शिकार के लिए गए हुए थे उसी समय इनके पिता की मृत्यु हो गयी । क्षत्रिय परंपरा का पालन करते हुए सिंहासन को रिक्तन रखते हुए उनके छोटे भाई को राजगद्दी सौप दी गयी। सुजनराय के वापस आने पर जब उन्हें वस्तु स्थिति का ज्ञान हुआ तो उन्होंने छोटे भाई के पक्ष में राजसिंहासन का त्याग कर दिया व संन्यास ग्रहण कर लिया। संन्यास के समय ही वे जशपुर पहुंचे जहां उन्होंने देखा कि प्रजा तत्कालीन डोम राजा से असंतुष्ट है, उन्होंने असंतुष्टों का नेतृत्व कर डोम शासक की हत्या कर जशपुर की राजगद्दी को स्वीकार कर लिया।[3] कालांतर में जशपुर रियासत ने नागपुर के भोसले की अधीनता स्वीकार कर ली।

जशपुर रियासत के प्रमुख शासक :- जशपुर रियासत के वर्तमान वंश को छोड़कर अन्य वंशो के किसी भी प्रमुख शासक की जानकारी हमें प्राप्त नहीं होती है। जशपुर राज्य के वर्तमान वंश के संस्थापक सुजनराय पहले प्रमुख शासक है जिसने जशपुर राज्य के स्थायित्व की नींव रखी। जशपुर राज्य के 24 राजाओं की जानकारी हमें प्राप्त होती है जिन्होंने सम्पूर्ण जशपुर क्षेत्र में अपना प्रभुत्व बनाएं रखा। सुजनराय के बाद राजा रणजीत सिंह देव (1808-1813) के मध्य के शासकों की हमें न्यून जानकारी मिलती है। राजा रणजीत सिंहदेव अपनी कूटनीतिक बुद्धिमत्ता का परिचय देते हुयें अंग्रेजों से मधुर सम्बंध बनाये रखने में सफल हुयें। उन्होंने ने सरगुजा के लाल संग्राम सिंह के विद्रोह के दौरान अंग्रेजों का साथ दिया और अनेक विद्रोही सैनिकों को पकड़ कर अंग्रेजों के हवाले किया। 1803 ई. में अंग्रेजों के संबलपुर आक्रमण के समय भी राजा रणजीत सिंह ने अंग्रेजों की खुलकर सहायता की थी।[4]

राजा रणजीत सिंह देव की हत्या के बाद उनके पुत्र राजा रामसिंह देव ने 1813 ई. से 1850 ई. तक जशपुर राज्य को अक्षुण्ण बनाएं रखा। मूढोजी भोंसले के साथ हुई 1818 की संधि उपरांत अंग्रेजों ने जशपुर को अलग राज्य का दर्जा प्रदान किया था इसके बावजूद राजा रामसिंह ने सरगुजा के माध्यम से अपना कर दिया। राजा रामसिंह देव के उपरांत राजा प्रताप नारायण सिंह देव (1850-1900) जशपुर की गद्दी पर बैठे। इनके शासनकाल में 1899 को जशपुर राज्य को अलग

राज्य का दर्जा प्रदान किया गया व वार्षिक कर की राशि 1250/- तय की गयी।[5] राजा प्रताप नारायण सिंह देव (1850-1900) के बाद राजा विशुन प्रताप सिंह (1900-1924) देव को गद्दी प्राप्त हुई। इनके काल में जशपुर राज्य में मिशनरीज गतिविधियों के कारण अशांति का वातावरण उत्पन्न हो गया परिणामस्वरूप 1923 को ब्रिटिश सरकार ने जशपुर राज्य को अपने अधीन ले लिया। राजा विशुन प्रताप सिंहदेव की मृत्यु के बाद राजा देवशरण सिंह देव ने जशपुर राज्य की कमान संभाली।

राजा देवशरण सिंह देव का शासन काल मात्र 6 वर्ष 2 माह रहा। राजा देवशरण सिंह देव के बाद जशपुर का राज्य राजा विजय भूषण सिंह देव (1926-1982) को 1931 ई. को प्राप्त हुआ। राजा बनने के समय इनकी आयु मात्र 6 वर्ष थी। भारत की स्वतंत्रता तक इन्होंने जशपुर का राज्य बड़ी कुशलतापूर्वक अनेक परोपकारी कार्य करते हुयें संभाला ।

जशपुर रियासत की जमीदारी :-

जशपुर रियासत सरगुजा समूह की रियासतों में दूसरी बड़ी रियासत थी। अपने वृहद क्षेत्रफल के कारण या कहे जशपुर रियासत में दुर्गम वनों के कारण प्रशासनिक सुविधा के लिए जशपुर रियासत में ज़मीदारी प्रथा अस्तित्व में थी। जशपुर रियासत में 5 जमीदारी थी, जिन्हें ज़मीदार या इलाकेदार कहा जाता था। इन जमीदार या इलाकेदार का अपने क्षेत्र में बहुत सम्मान था। जशपुर रियासत में राजस्व वसूली का कार्य जमीदारों के माध्यम से होता था।

खुड़िया जमीदारी :- खुड़िया ज़मीदारी जशपुर रियासत की सबसे बड़ी ज़मीदारी थी। यह ज़मीदारी कोरवा आदिवासीयों के पास थी। खुड़िया पठार के 81 गाँव इस ज़मीदारी के अधीन थे। खुड़िया जमीदारी का मुख्यालय सन्ना नामक गाँव मे स्थित था। ऐसा माना जाता है कि खुड़िया इलाके के जमींदार ने इसी शर्त पर जशपुर राज्य की अधीनता स्वीकार की थी कि दीवान का पद उन्ह मिले अतः खुड़िया ज़मीदार जशपुर रियासत के वंशानुगत दीवान होते थे।

केराडीह जमीदारी :- जशपुर से 18 किमी दूरी पर केराडीह ग्राम स्थित है। जशपुर रियासत के समय इस जमीदारी में 25 ग्राम सम्मिलित थे। केराडीह ज़मीदार की उपाधि बड़ाइक थी। केराडीह जमीदारी जशपुर नरेश ने स्वामिभक्ति से प्रसन्न हो कर प्रदान की थी। यह जमीदारी रौतिया कंवर जनजाति के अधीन थी।

बन्दरचुआ जमीदारी :- बन्दरचुआ जमीदारी के इलाकेदार कंवर जनजाति के थे। इस जमीदारी के अंतर्गत 34 ग्राम आते थे।

आरा जमीदारी :- आरा जमीदारी जशपुर से पूर्व में स्थित थी। यहाँ के इलाकेदार रौतिया कंवर जाति के थे। इस जमीदारी में 30 ग्राम थे।

फरसाबहार जमीदारी:- जशपुर के दक्षिण में स्थित फरसाबहार जमीदारी रियासत की सबसे छोटी जमीदारी थी। यहाँ का इलाकेदार गोंड़ जनजाति के थे। इस जमीदारी में सात गांव आते थे।[6]

जशपुर रियासत की प्रशासनिक व्यवस्था :- जशपुर रियासत की शासन व्यवस्था का प्रमुख राजा होता था। यह सम्पूर्ण प्रशासनिक व्यवस्था का केन्द्र बिंदु होता था। लेकिन ब्रिटिश शासन के दौरान ब्रिटिश प्रशासन की रियासत में हस्तक्षेप बढ़ता ही गया। राज्य का सबसे महत्वपूर्ण पद दीवान का था जो राजा का प्रमुख परामर्शदाता था। इसके अधीन नायब

दीवान व तहसीलदार का पद था। दीवान की अधीनता में जंगल,शिक्षा, आबकारी, पुलिस आदि विभाग थे जिसमें कई अधीनस्थ कर्मचारी कार्य करते थे।[7]

जशपुर रियासत की राजस्व व्यवस्था :- जशपुर रियासत की राजस्व व्यवस्था का सबसे महत्वपूर्ण भाग भू राजस्व था। जशपुर रियासत में भूमि दो प्रकार की थी। एक थी खालसा भूमि जो राजा के अधीन थी दूसरी थी इलकेदारों के अधीन आने वाली भूमि। खुड़िया जमीदारी को छोड़कर बाकी जमीदारियों की भूमि बिखरी हुई थी खालसा भूमि को प्राप्त करने वाले ठेकेदार कहलाते थे सामन्यतः खालसा भूमि 3 वर्ष के लिए प्रदान की जाती थी। जशपुर रियासत में भू राजस्व व्यवस्था बहुत ही सुसंगठित व सुस्पष्ठ थी। रियासत में लगन केवल दोहन भूमियों पर लगता था। जशपुर रियासत में 23 गांव माफी गाँव थे। तहसीलदार, राजस्व निरीक्षक व पटवारी प्रमुख राजस्व अधिकारी होते थे जो दीवान के अधीन कार्य करते थे।[8]

निष्कर्ष :- जशपुर रियासत सुदृढ़ प्रशासनिक व्यवस्था, उचित राजस्व व्यवस्था व विभिन्न कुशल राजाओं के नेतृत्व के कारण, जशपुर रियासत अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाये रखने में सफल रहा। जशपुर रियासत को परिस्थितिवश मराठा, सरगुजा राज्य की अधीनता स्वीकार करनी पड़ी फिर ब्रिटिश साम्राज्य के आंधी में डूबना पड़ा, परंतु जशपुर राज्य का स्वतंत्र अस्तित्व 300 वर्षों तक हमेशा बना रहा, यह जशपुर राज्य के शासकों की लोकप्रियता, उनके प्रजावत्सल्यता और शक्ति को दर्शाता है। जशपुर रियासत लम्बे समय तक एक स्वतंत्र रियासत के रूप में मौजूद रहा जो छत्तीसगढ़ के क्षेत्रीय इतिहास लेखन में अपनी सशक्त मौजूदगी दर्शाता है।

संदर्भ सूची :-

1. ब्रिटिशकालीन छत्तीसगढ़ हिंदी गजेटियर, भाग 1, छत्तीसगढ़ राज्य हिंदी ग्रंथ अकादमी, 2017 पृ. 339
2. इम्पीरियल गजेटियर ऑफ इंडिया प्रोविंशियल सीरीज सेंट्रल प्रोविंसस, पृ. 469
3. छत्तीसगढ़ की रियासतें, छत्तीसगढ़ राज्य हिंदी ग्रंथ अकादमी, 2008 पृ. 417-418
4. रक्षित विजय, जशपुर रियासत के इतिहास, इंस्टिच्यूट फ़ॉर सोशल डेवलपमेंट एंड रिसर्च, राँची 2023 पृ 50-51
5. इम्पीरियल गजेटियर ऑफ इंडिया प्रोविंशियल सीरीज सेंट्रल प्रोविंसस, पूर्वोक्त पृ 470-471
6. रक्षित कुमार विजय, जशपुर : एक अध्ययन, जी. एच्. पब्लिकेशन प्रयागराज, 2003 पृ 93-95
7. ब्रिटिशकालीन छत्तीसगढ़ हिंदी गजेटियर पूर्वोक्त पृ 347
8. रायगढ़ जिले गजेटियर पृ 227-228

■ ■ ■